धर्म जीवन

जनवरी 2007

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का
156 वां शुभ जन्म महोत्सव

पृष्ठ 19 से आगे

14 अक्टूबर शाम 8.00 बजे :- इस सभा में श्रीमान जी ने बताया कि देव धर्म दूसरे धर्मो से अलग है। जहाँ दूसरे धर्म ज़्यादातर ज़ोर ईश्वर पूजा, जाप, पाठ, कीर्तन आदि पर देते हैं, वहीं देव धर्म का काम नीच जनों को बदल कर भला या उच्च बनाना है। देव धर्म का कारज देव प्रभावों के द्वारा होता है। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव अधिकारी आत्माओं के अन्दर प्रवेश करवाकर उच्च परिवर्तन पैदा करना है। श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी हमेशा के लिए पवित्र हो गये। देव आत्मा की एक सभा से प्रभाव प्राप्त करके उनके जीवन में परोपकार मुख्य लक्ष्य बन गया। हर जन के साथ पक्षपात रहित होकर बहुत सुन्दर परोपकार किया। हरिजन बच्चों के लिए स्कूल खोले। साधु जानकी दास जी उतनी देर तक नज़रें नीची रखने का साधन लिया जब तक स्त्री जाति के प्रति उनका हृदय पवित्र नहीं हुआ। उन्होंने कई और जनों के बड़े सुन्दर परिवर्तन बताये जो नीच से उच्च बन गये। कई उदाहरण ऐसे हृदय स्पर्शीय दिये कि इन्सान अपनी नीचता देख के मुंह काला करके बैठने के लिए मजबूर हो गये। यह लासानी धर्म कारज और कोई नहीं कर रहा और किसी साधन द्वारा हो नहीं सकता। सत्य धर्म का कारज देव प्रभावों के द्वारा ही होता है।

15 अक्टूबर सुबह 8.30 बजे :- इस सभा में श्रीमान जी ने बताया कि आमतौर पर हम अन्धेरे में जीवन व्यतीत करते रहे हैं। कई तरह से मनुष्य अन्धा है। जैसे छोले का दाना जो जमीन में गिर के कुछ बारिश की बूंदों से फूट कर पौधा बनता है, पत्तियां, टहनियां, फूल निकलते हैं, फल लगता है, और दाने पैदा कर देता है पर ये गिना या मापा नहीं जा सकता कि कितनी बारिश की बूंदें उस के उगने से फल पकने तक उस पर पड़ीं। ठीक इसी तरह मनुष्य जीवन औरों के अनगिनत उपकारों का फल है। माता-पिता के अमूल्य उपकार हैं। डाक्टर के, अध्यापक के और लोगों के उपकारों की गिनती नहीं की जा सकती। बाबा भल्ला जी जो सभापति जी के अध्यापक थे उनके उपकारों का सुन्दर भावों द्वारा ब्यान किया। अपने कॉलेज के प्रिंसिपल के उपकार भरे रूप का भी वर्णन किया। हाज़रीन भी प्रभावित हो रहे थे। एक सीमा तक अपने उपकारियों को देखने के लिए, उपकार महसूस करने के लिए मजबूर हो रहे थे।

गोनिआणा मण्डी :- श्रीमान जी 15 अक्टूबर को साथियों सहित यहाँ पहुँचे। शाम 8.30 बजे श्रीमान ज्ञान चंद जी के घर सभा की गई जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। लोकल सेवकों के इलावा महिमा सवाई से श्रीमान गुरूदेव सिंह जी मान अपने सुपुत्र और एक साथी के साथ शामिल हुए। सभापति जी ने बताया कि बीमारी का डॉक्टर के द्वारा कुछ खास टैस्टों से ही पता लगता है। शुगर ने सेहत का क्या हाल कर रखा है। Angiography द्वारा ही दिल की बिमारियों का ज्ञान हो जाता है। नहीं तो सेहत की तरफ से इन्सान अन्धेरे में ही रहता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा मनुष्य का आत्म अन्धकार दूर करते हैं। हम अपने हितकारियों को उन के ठीक रूप में न देख के उल्टा घटिया रूप में देखते हैं। देव ज्योति आत्मा का अन्धकार दूर करती है। स्वार्थ के अन्धेरे में उपकारियों के सुन्दर उपकार नज़र नहीं आते। कृतघ्न इन्सान को कृतज्ञ बनाना देव आत्मा का कारज है।

(बाकी फिर)

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 1
जनवरी 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 156वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 156 वाँ शुभ जन्म महोत्सव 3 दिसम्बर से 6 दिसम्बर तक शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैय्यारियाँ की गईं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का अपने साथियों के साथ दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुँचने की प्रेरणा दी। बहुत से पत्र इस मकसद के लिए लिखे गए। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। इनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद पहुँचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमन्त्रण पत्र छपवाकर अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए इस साल पहले की तरह पंडाल बनाया गया। उसके लिए तरपाल डाली गई। पंडाल को अन्दर से बर्फ नुमा सफेद चादरों से खूब सजाया गया। बिजली के सुन्दर फानूसनुमा शैण्डलियर लटकाए गए। गुरु महाराज का नया बहुत बड़े साईज का फोटा (जो पहले तैय्यार करवाया गया था) और माटोज़ सजाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पण्डाल के दोनों ओर सजाए गए। हाल को जगदीश जी, मोना जी, विनय जी अर्थात उनके परिवारिक जनों ने कुछ अन्य जनों की सहायता लेकर सजाया। हाल को पौधों और गमलों से भी सजाया गया। झण्डे लगाकर और बड़ा विजय पताका लगाकर सेहन और ईर्द-गिर्द के स्थान को सुसज्जित किया गया। जगदीश जी के साथ मधू सूदन जी और प्रदीप जी ने भी बहुत सहायता की। बैंड आदि का प्रबन्ध किया गया। धर्मशाला के कमरे बहुत साफ सुथरे किए गए। इस पावन अवसर पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पहुँचे। कल्याण, भुच्चो मण्डी, चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला, दड़वा, बलटाना, राएपुर खुर्द, दिल्ली, मेरठ, खतौली, मंडवाड़ी, लुधियाना, जींद, अम्बाला, केसूपुरा, मलेका, कुआंखेड़ा, ढाणी मौजदीन, बनी, मानसा, डेरा बस्सी, फिरोज़पुर, देहरादून, गज सिंह पुरा, पदमपुर, राएपुर रानी, मुज्जफर नगर, लखनऊ, गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, थराजवाला, मोगा, समराला, संगरूर, जंडवाला, गुजरात आदि स्थानों से यात्री आए।

लोकल हिन्दी वा अंग्रेजी अखबारों में महोत्सव के प्रोग्राम का हाल छपता रहा। यात्रियों के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का भरपूर प्रबन्ध था। यह सेवा श्रीमान सीता राम जी और बूटा सिंह जी खुशी-खुशी करते रहे। घण्टा बजाने का काम श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा जी करते रहे। पुस्तकों के स्टाल पर भी वर्मा जी आदि सेवा करते रहे। दफ्तर का काम श्री जगदीश जी, उनके बेटे विनय जी, दत्ता जी और विशिष्ट जी करते रहे। भजनों का गान जगदीश जी और दत्ता जी करते रहे। हारों आदि का प्रबन्ध श्री जगदीश जी वा विनय जी ने किया। गैसों आदि का प्रबन्ध भी किया गया।

गुरुदेव राज जी ने सुबह के कीर्तन में अपनी पार्टी के साथ बहुत जोश से भजन गाए। बच्चों की सभा, श्रीमती सुरजीत जी बराड़, सरोज जी कुक्कड़ और उनकी बेटी मोनिका ने सम्भाली। आने वाले जनों की संख्या 200 से भी अधिक थी। विशेष दिन चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर के लगभग 300 लड़के, लड़कियाँ आए, उन्होंने भजनों आदि में भाग भी लिया और शाम का लैक्चर बहुत ही संजीदगी से सुना और प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

खाने का प्रबन्ध बहुत अच्छा रहा। सब पूरी तरह से सन्तुष्ट रहे। इस सारे प्रोग्राम के लिए गुरु महाराज और सहायकारी शक्तियों को जितना भी धन्यवाद दिया जाए, कम है।

महोत्सव की सब सभाओं में ही बहुत अच्छा देव प्रभाव दायक मण्डल बनता रहा। सभाओं का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है :-

3.12.2006

प्रवेश सभा :- शाम 4.00 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

"हमारे पूजनीय सत्गुरु जी, तुम हो धन्य, तुम हो धन्य।" नामक भजन श्रीमान जगदीश जी और साथियों ने गाया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा सुन्दर हार पहनाकर अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के हार्दिक भावों से गान के बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने व्याख्या की। फिर सभापति जी ने सब उपस्थित जनों का सहयोग लेते हुए, महोत्सव की सफलता के लिए आशीर्वाद प्रार्थना की "बड़े धन्यभाग्य उनके हैं, जो गुरु चरणों में आते हैं" भजन श्रीमान जगदीश जी कुक्कड़ ने गाया। इसके उपरान्त सभा में अच्छा मण्डल बन गया।

सभापति जी ने बताया कि दुनिया के सब देशों में बहुत विशाल उत्सव हर वर्ष मनाए जाते हैं। मुस्लिम लोग हर वर्ष हज्ज की यात्रा करते हैं, जहाँ करोड़ों लोग हज्ज करने जाते हैं। हमारे देश में अमरनाथ यात्रा प्रतिवर्ष होती है। लाखों लोग जान खतरे में डालकर इस यात्रा में जाते हैं। कुम्भ का मेला 12 वर्ष बाद आता है, तो करोड़ों जन इसमें स्नान करते हैं। इन उत्सवों पर बहुत अधिक खर्च और बड़े-बड़े प्रबन्ध किए जाते हैं। बेशक इन उत्सवों पर प्रतिवर्ष बहुत सी दुर्घटनाएँ होती हैं। प्रत्येक वर्ष हज्ज पर गए लोग शैतान पर पत्थर मारते हैं और यह करते हुए भगदड़ में कितनों की मृत्यु हो जाती हैं। अमरनाथ के यात्रियों पर प्रत्येक वर्ष हमले होते हैं और मौतें भी होती हैं। जन समूह में यह प्रश्न पैदा ही नहीं होता कि इन उत्सवों में शामिल होकर क्या लाभ प्राप्त होता है। स्वभाव में क्या शुभ परिवर्तन पैदा हुआ? अनेक सूरतों में कई अभागे जन पहले से भी खराब होकर वापिस आते हैं।

श्रीमान जी ने फरमाया : आप सब जिस उत्सव में शामिल होने के लिए पधारे हो,

इसका अपना निरालापन है। यहाँ कोई विशाल जन समूह नहीं। खर्च और प्रबन्ध के लिहाज़ से भी इसकी कोई विलक्षणता नहीं है। पर हकीकत यह है कि विश्व के भीतर नेचर की सर्वोच्च हस्ति परम पूजनीय भगवान देवात्मा का जन्म उत्सव है जो पूर्ण सत्य अनुरागी वा पूर्ण शुभ अनुरागी थे। सब सुख अनुरागी मनुष्यों का यह परम सौभाग्य है कि देव अनुरागी देवात्मा के शुभ जन्म उत्सव में शामिल होकर अपना अधिक से अधिक हित कर सकें। इस उत्सव में देव प्रभावों की वर्षा होगी या यह कहो कि गंगा बहेगी और अधिकारी आत्माओं का बहुत हित साधन होगा, जैसे कि पहले भी प्रतिवर्ष महोत्सव पर हुआ करता है। अनेक आत्माओं के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ जाता है।

फिर सभापति जी ने खड़े होकर सब आने वालों का स्वागत किया। फिर बताया कि इस सभा में ही पिछले वर्ष ही प्रेम कुमार जी प्रभावित होकर अपने उपकारी चाचा जी के सम्बन्ध में गुनाहगार वा अपराधी अनुभव करने लगे और दु:खी हृदय के साथ अपनी पतित हालत का ब्यान करने के लिए मजबूर हो गए थे। फिर जिस सच्ची तड़प के साथ उन्होंने और उपकारियों की सहायता के साथ उस नीच गति का सच्चा परिशोध किया, उससे और भी कई हृदय प्रभावित हुए। सम्बन्धों में सुन्दर मेल की अवस्था आई। यह पूजनीय भगवान के देव प्रभावों का एक ज़िन्दा उदाहरण है।

इस प्रकार सभापति जी ने डाक्टर मुन्शी सिंह जी के कमाल के परिवर्तन का ब्यान किया। यह जिस प्रकार देवात्मा के कार्य में सेवाकारी हो रहे हैं। इन्होंने बड़ी दुर्घटना में बहुत बहादुरी का उदाहरण पेश किया है। मण्डी पदमपुर (राजस्थान) में एक नया क्षेत्र बन गया है देव धर्म मिशन का, क्योंकि देव प्रभावों का कारज विलक्षण हैं, डाक्टर साहिब के कई अन्धकार-मय पक्ष रोशन हो गए हैं।

इस प्रकार देव धर्म के इतिहास में श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी के सुन्दर जीवन का ब्यान करने के बाद एक महोत्सव पर उनके श्रद्धेय पिता जी का अपने सुपुत्र के चरणों में पगड़ी रखकर अपने दुर्व्यवहारों के प्रति दोषी महसूस करने के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर घटना बताई। कई और सुन्दर परिवर्तनों का ज़िकर किया जो देव प्रभावों द्वारा पैदा हुए। श्रद्धेय श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी का देव प्रभावों को साक्षात प्राप्त करने के बाद सदा के लिए पवित्र हो जाने का दृष्टांत बताया गया।

इस सभा में बताया गया कि आगे होने वाली सभाओं में देव प्रभाव प्राप्त करके हम अपना बहुत बड़ा हित साधन कर सकते हैं। शर्त यह है कि देव प्रभाव प्राप्त करने के नियम पूरे हो जाएं, अर्थात हम सच्चे दीन बन जाएं, देव प्रभावों की सच्ची जरुरत को हार्दिक तौर पर महसूस कर सकें। ज़ोरदार प्रार्थी बन जाएं। गुण चिन्तन की तरफ ध्यान दे सकें। उपकारियों के योगदान को महसूस करके सच्चे दिलों से झुक जाएं। दुश्चिन्ता से बचें। अपने दोषों को, अपने दुर्व्यवहारों को, अपनी नीचता को सामने लाकर, सच्चे दिल से दुखी वा शर्मसार हो सकें। हर सभा में समय पर आएं, प्रार्थनाशील होकर बैठें। एकाकारी पहनकर आएं। महोत्सव की सफलता के लिए ज़ोरदार शुभ कामना करें। सुन्दर भजनों का गान करें। यदि नहीं पढ़ सकते तो किसी और से पढ़वाकर सुनें। ऐसे नियमों की पूर्ति के साथ अवश्य देव प्रभाव मिलेंगे। हमारी योग्यतानुसार महोत्सव बहुत हितकर प्रमाणित होगा।

आखिर में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब

यात्रियों का बड़े सुन्दर भावों से स्वागत किया। आने वाले दिनों में सब डियूटिओं और प्रबन्ध का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। यह सभा काफी प्रभावशाली थी। भगवान देवात्मा की चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त की गई।

4 दिसम्बर सोमवार

पहली सभा 8.30 बजे सुबह

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय :– परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

पूजनीय भगवान का छवि द्वारा अर्चन और भजन के गान के बाद देव स्तोत्र का गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा के चरणों में दीनभावी होकर ज़ोरदार सहाय प्रार्थना की और आशीर्वाद की भीख मांगी। उनका दिल भरा हुआ था। उसके बाद "परम आवश्यक जीवन दायक, मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन का गान किया गया।

सभापति जी ने ब्यान आरम्भ किया कि सारे जीवधारियों के जीवनों में सम्बन्धों की बड़ी महिमा है। सम्बन्धों के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं, जीवन मूल्यों की कोई समझ नहीं। मानवीय समाज ने जितना भी विकास किया है, वह सब सम्बन्धों के ही कारण है। यदि हवा का या आक्सीजन का सम्बन्ध काट लिया जाए, तो जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। इसलिए हवा का सम्बन्ध परम आवश्यक है। इसी प्रकार पानी बेजान है, परन्तु जीवधारियों के लिए उसका सम्बन्ध परम आवश्यक है।

अब प्रश्न यह है कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सम्बन्ध परम आवश्यक जीवन दायक क्यों है? हमारे अस्तित्व के भीतर भौतिक शरीर और आत्मा दो वस्तुएं है। प्रत्येक जीवधारी शरीर भी रखता है और उसके भीतर जीवनी शक्ति भी रखता है। मनुष्य की जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा विकसित जीवनी शक्ति है। किसी पौधे में दिमाग नहीं, उनके भीतर दिमाग पैदा करने की योग्यता नहीं। पशुओं की जीवनी शक्ति में कुछ निम्न प्रकार की मानसिक शक्तियों वाला दिमाग विकसित हुआ है। परन्तु मनुष्य में विकासशील मानसिक शक्तियां विकसित हुई हैं, इसीलिए इसको अशरफुल मखलूकात कहा जाता है। इन्हीं मानसिक शक्तियों के कारण मनुष्य ने अथाह विकास किया है, परन्तु अफसोस कि उसको पता ही नहीं उसकी हस्ती में मुख्य वस्तु क्या है, उसका विनाश भी हो सकता है कि नहीं, उसका विकास भी सम्भव है कि नहीं, यदि है तो वह किस प्रकार। मनुष्य जीवन रखता है, परन्तु जीवन का सच्चा और साक्षात ज्ञान नहीं रखता। इसलिए अपने हाथों अपने जीवन और अपनों के जीवनों की बर्बादी करने के लिए मजबूर है। मनुष्य यह नहीं जानता कि मैं अपनी हानि क्यों करता हूँ? यह हानिकारक गतियां मुझसे कौन करवाता है? मैं अपना खुशी-खुशी दुश्मन क्यों बन जाता हूँ? मनुष्य को सब गतियों के लिए उसके सुख अनुराग प्रेरित करते हैं, यही उसके परिचालक हैं, परन्तु उसे इस हकीकत का पता नहीं। नीच सुख अनुराग शरीर के ईलावा आत्मा के लिए भी हानि, दुख और मौत के कारण हैं। आत्मा के विकास के नियम हैं। नीच घृणाएं आत्मा के लिए भयानक आग हैं, पर मनुष्य को पता नहीं। देवात्मा ही, हाँ केवल देवात्मा ही यह ज्ञान देने में समर्थ हैं, क्योंकि उनके भीतर सत्य अनुराग और शुभ अनुराग के विकास के कारण उनके भीतर देव ज्योति और देव तेज का विकास हुआ है। अध्यात्मिक

नियमों के पूरा होने के साथ जब मनुष्य को देव ज्योति प्राप्त होती है, तो वह यह महसूस करने के योग्य हो जाता है कि नीच अनुराग मेरे अस्तित्व के भीतर मेरे आत्मा की हानि करते हैं। उच्च भावों या सात्विक भावों के साथ आत्मा की जान बढ़ती है। देवात्मा के बल को प्राप्त होकर मनुष्य आत्मिक तौर पर बलवान हो जाता है, जिन सुखों के आगे पहले बेबस और लाचार था, उनसे बचने की अनोखी ताकत महसूस करता है।

श्रीमान लाला जुल्ली राम जी कानूनगो आत्मिक अन्धकार के कारण रिश्वत लेने को कमाई समझते थे, पर देव आत्मा की देव ज्योति में रिश्वत लेना साथी मनुष्यों का खून पीना नज़र आ गया और सदा के लिए इस पाप से बच गए। हिंसक जीव से सेवाकारी जीव बन गए। अन्धकार में श्रीमान देवत्व सिंह जी बचपन में कांटों को टिडिड्यों की आँखों में पार करके खुशी महसूस करते थे। जीवों का दुःख नज़र नहीं आता था। देवात्मा के सम्बन्ध से जीवन उन बुलन्दियों को प्राप्त हुआ, जिस की मनुष्य कल्पना नहीं कर सकता। बेजान वस्तुओं की हानि भी अत्यन्त दुःखी करने लग गई। एक बार लैंप की चिमनी टूटने से बहुत तड़पे कि हाय! मैंने इस वजूद का खून कर दिया। जहाँ और धर्म सम्बन्धों से उपराम होने की हानिकारक शिक्षा देते हैं, देवात्मा सम्बन्धों को धर्म जीवन का आधार बताते हैं। सम्बन्धों में ही जीवन की सफलता और सच्चे धर्म की प्राप्ति होती है। सभापति जी ने अपने जीवन में माता - पिता, भाई - बहनों के सम्बन्ध में देवात्मा की कृपा से आए आश्चर्य जनक शुभ परिवर्तन का हार्दिक भावों से कुछ वर्णन किया। स्त्री जाति के सम्बन्ध में शुभ परिवर्तन का भरे दिल से धन्यवाद करते हुए वर्णन किया कि यह कोढ़ किसी सीमा तक दूर हुआ है।

सभापति जी ने और दृष्टांतों के द्वारा यह नक्श करने का शानदार सार्थक यत्न किया कि देवात्मा सच्चे अर्थों में जीवन के दर्शन करवाते है। उनके प्रभावों के द्वारा जीवन के असल लक्ष्य की सोझी प्राप्त होती है। स्वार्थ आत्मा के लिए मौत है, जीवन का नाशक है। ईर्षा, द्वेष सब जीवन नाशक आग हैं। श्रद्धा जीवन अमृत है, शुक्रगुजारी जीवनवर्द्धक है। हमदर्दी रूह की खुराक है, हानिपरिशोध आत्म शुद्धि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। देवात्मा के सच्चे जीवन दर्शन में ही परोपकार की सच्ची महिमा और ज़रूरत महसूस होती है। देवात्मा का सम्बन्ध ही जीवन देता है और दे सकता है, यह मेरे वर्णन से बाहर है। पर जिस अंश महसूस होता है, वह बहुत सुन्दर है। बहुत आनन्द दायक, बहुत हितकर लगता है, यही कहना वाजिब है :-

"अजब नहीं अकसीर तुम्हारी, खाक को चाहे ज़र कर दे, फर्शे ज़मी से हमको उठाकर अर्श पे जलवागर कर दे"

शाम 4.00 बजे, पब्लिक लैक्चर, विषय :- देवात्मा कैसा देवराज लाना चाहते हैं? इस लैक्चर को अदा किया मिसिज सुरजीत बराड़, रिटायरड प्रिंसीपल ने और इस सभा की अध्यक्षता श्री डा. विनोद जी खेड़ा ने की।

सर्वप्रथम भजन का गान किया गया, फिर डा. साहिब ने सुरजीत जी के विषय में चन्द शब्द कहे कि किस प्रकार स्कूल में प्रिंसिपल के तौर पर उन्होंने शानदार काम किया और फिर अपने धर्म पति जी के साथ देव धर्म के काम में हाथ बटाया है, जो बहुत सराहनीय है।

उसके बाद एक भजन का गान किया गया

और वक्ता ने अपना ब्यान शुरू किया। उन्होंने बताया कि दुनिया रामराज्य के सपने देखती है और उसके लिए तरह - 2 के धर्म साधनों के आडम्बर बताए गए है। परन्तु धार्मिक स्थानों की गिनती जितनी बढ़ रही है, उतना ही पाप राज फैल रहा है। किस प्रकार लड़ाई झगड़ों के कारण कचहरिएं भरी पड़ी हैं, वहाँ पर भी ताकत और पैसे से इन्साफ खरीदा जाता है। बलात्कार की भयानक घटनाएं घट रही हैं, पशुओं पर जुल्म हो रहा है। नशों से कैसे गाँव शहर बर्बाद हो रहे हैं। घर जिन्दा नर्क बने हुए है। नशे में मनुष्य अपने ही बच्चों और पत्नी का कत्ल कर देता है, ऐसी कई घटनाएं बताईं।

स्त्रियों पर कैसे जुल्म हो रहे हैं, मिथ्याओं के द्वारा नर्क फैला हुआ है। जिहाद के नाम पर मासूमों पर जुल्म हो रहे हैं। ईमारतें, गाड़ियां, बसें जलाई जा रही हैं। परिवारों में कलह क्लेश है। घर जल रहा हो तो कोई जाप करने नहीं बैठता। इसी प्रकार नाम जपने या धार्मिक स्थानों पर मत्था टेकने से यह नर्क दूर नहीं हो सकता। किसी भी धर्म का लक्ष्य यह नर्क दूर करना नहीं।

नेचर में विकास और विनाश दोनों चलते हैं। जहाँ विनाश की लीला जारी है, वहीं विकास के क्रम में सात्विक जीवन धारी पैदा हुए, जिन्होंने एक - 2 बुराई को देखा और दूर करने का पूरा यत्न किया। उसी विकास क्रम में परम पूजनीय भगवान देवात्मा देव शक्तियों को लेकर आविर्भूत हुए, देवशक्तियां क्या थीं? सत्य और शुभ के प्रति पूर्णांग अनुराग, झूठ और बुराई के प्रति पूर्णांग घृणा। उन्होंने देखा कि विश्व में पाठ और मिथ्या का राज है, पिशाचत्व का राज है, ईर्षा, द्वेष, स्वार्थ, घमंड, घृणा का राज है। यह राज कहीं बाहर नहीं उसके हृदय में है। हृदय की भाव शक्तियों में है। हृदय की शक्तियों को बदलने से ही पाप का राज मिट सकता है, परन्तु हृदय को बदलना महा कठिन काम है। अलम जी ने लिखा है :-

कारज कठिन है दिलां दा बदलना जी,
कौन नित्तरे इस मैदान प्यारो,
पापी दिलां नूं बदल जो करे धर्मी,
ऐसे गुरू तो जाओ कुर्बान प्यारो,

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने ऐसे कठिन काम के लिए भरी जवानी में अनोखा जीवन व्रत ग्रहण किया :-

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के ही उपकार में जीवन यह जाये"

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने वर्षों तक घोर संग्राम करके उन कारणों को ढूंढा, जिससे नर्क उपजता है और उसे दूर करने के समाधान बताए। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यह काम होने के लिए है, वह विश्वास से भरकर गाते थे :-

"यहाँ देव राज आएगा, मुझको यकीन है,
देवत्व ही फतह पाएगा, मुझको यकीन है"

उनका यह कथन सच हुआ जब उन्होंने कृतघ्न जनों को बदलकर कृतज्ञ बना दिया। अहंकारी जनों के सिर झुका दिए। वफादार पति पैदा किए। उन्हें अपने बुरे स्लूकों के लिए क्षमा याचना करने वाले बना दिया। सरकश बेटों को माता पिता के भगत बना दिया। जहां - जहां देवत्व की किरणें पहुँची, वहाँ - वहाँ देव राज आया है।

उसके बाद वक्ता ने बताया कि देवात्मा ने श्रद्धेय कनल जी जैसे, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे आदर्श अध्यापक पैदा कर दिए।

उसके बाद पंडित नेतराम जी का नारकीय जीवन कैसा स्वर्ग में बदल गया और वह पुकार

उठे: -

धर्म विकासालय न आऊंदा, पाऊंदा दुख घनेरे मैं,

दारू पींदा, मुर्गे खांदा, जुए विच घर बार लुटांदा,

मारिया वैलां दा मर जांदा, आऊंदा न जे दर तेरे मैं,

मैले पाप कर्म कमाके, लोकां नूं तकलीफ पहुँचा के

रहंदा इक दिन जेलीं जाके, दिन्दा कोल्हू गेड़े मैं"

उसके बाद दविन्द्र सिंह जी लुक्खी जो शराबी, शिकारी थे, पत्नी से झगड़ा, पिता का अपमान करने वाले थे, उनके घर में देवराज की वह झलक देवात्मा की कृपा से पैदा हुई कि वह पिता के चरण धोने, उन्हें लेटकर प्रणाम करने वाले बन गए। पत्नी का सन्मान करने वाले बन गए। पिता जी अपने पैसों में से 6 लाख रू० देना चाहते थे, परन्तु वह न लेकर पिता की सेवा लेना अधिक सौभाग्य समझने लगे।

फिर वक्ता ने अपने परिवार की थोड़ी झलक दिखाई कि हमारा परिवार गुरु की कृपा से किन बरकतों को सम्भोग कर रहा है।

आखिर में उन्होंने जोश से भरकर बताया कि देवात्मा अपनी देव अमृत की तासीरें हृदयों में पहुँचाकर उनकी नीच शक्तियों को मिटाकर उच्च शक्तियाँ पैदा करके सच्चा देव राज लाते हैं :-

- ऐसा देव राज जिसमें नशों का साया भी न हो।
- ऐसा देव राज जहाँ पराया धन, पराई संपत्ति और पराया हक अपहरण न हो।
- ऐसा राज जहाँ चोरी, ठगी, रिश्वत, डाके का लेशमात्र भी न हो।
- ऐसा राज जहाँ बहू, बेटियों की तरफ कोई मैली आँख से भी न देखे, बल्कि उनके रखवाले बन जाएँ।
- ऐसा राज जहाँ भाई का पसीने बहे तो दूसरा भाई वहाँ पर खून बहाने के लिए तैय्यार हो।
- ऐसा राज जहाँ पति पत्नी परस्पर सच्चे मित्र हों, एक दूसरे पर कुर्बान हो जाएँ, किसी का अपमान न हो।
- ऐसा राज जहाँ शादी ब्याह पर दहेज का अभिशाप न हो।
- ऐसा राज जहाँ पर-सेवा बड़ी कमाई दिखाई दे।
- ऐसा राज जहाँ आत्म ज्ञान ही सर्वोच्च ज्ञान समझा जावे।
- ऐसा राज जहाँ आत्म कल्याण की लालसा ही प्रधान हो।

इसके साथ ही वक्ता ने अपना ब्यान समाप्त किया और फिर सभापति जी ने जहाँ वक्ता का धन्यवाद किया वहाँ बताया कि उन्होंने विषय को किस सरल ढंग से पेश किया है, जो प्रशंसनीय है।

5 – 12 – 2006 महोत्सव का विशेष दिन

प्रात : 6.30 बजे यात्रीगण फूलमालाएं लेकर धर्मशाला के आंगन में एकत्रित हो गए और उन्होंने गुरु महिमा के गीत गाने शुरू किए। यह सब बहुत सुन्दर था। एक तरफ बैंड बाजा तैय्यार खड़ा था। दूसरी तरफ धर्म सम्बन्धी एक दूसरे से बढ़कर चाव भाव से भजनों का गान कर रहे थे। और श्रद्धा भाव से कितने ही दिल भरे हुए थे। गुरुदेव राज जी केसूपुरा और उनके साथी बहुत ही जोश से भरकर

आगे गा रहे थे, बहुत ही प्रभावदायक वातावरण बन रहा था।

सूर्य की पहली किरण के साथ घंटा बजने लगा। उसके साथ ही भगवान देवात्मा की जय ध्वनि के नारे बुलन्द होने लगे और उसके साथ ही "प्रगटे देवगुरु भगवान जीवन ज्योति देने वाले" नामक भजन का भाव विभोर होकर गान शुरू हुआ, भजन के उपरान्त फिर जय ध्वनि के नारे गूंजने लगे।

फिर स्टेज पर खड़े होकर सैक्रटरी देव धर्म श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यात्री गणों को इस मुबारिक दिन की बहुत-बहुत बधाई दी, और फरमाया कि देवात्मा का आविर्भाव हमारे चारों जगतों के कल्याण से जुड़ा है। मानवता पर पूजनीय भगवान के अध्यात्मिक उपकारों को याद करवाया। उस महा तीर्थ को याद किया कि जिस नगरी में, जिस घर में, जिन माता पिता के यहाँ देवात्मा ने जन्म पाया। और सब पूर्वजों को याद किया और यह कामना की कि यह कारज चारों ओर फैले, फिर उल्लास से भरकर सबने जय ध्वनि की। उसके बाद बैंड बाजा बजना शुरू हुआ तो कई श्रद्धावान जन खुशी से झूम उठे और सचमुच नाचने लगे, सब प्रकार अजीब प्रकार का चाव था।

दूसरी तरफ कतारों में यात्री गण फूल मालाएं लेकर अर्चन के लिए बढ़ने लगे। इस प्रकार पूजनीय भगवान को सबने श्रद्धांजलि भेंट की और महा सभा का आरम्भ हुआ।

महासभा सुबह : 8.30 बजे
सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी।
भजन : देव जीवन धारी भगवन, पूर्ण धर्म अवतार

इसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा के दरबार में सहाय प्रार्थना की गई जो सभापति जी ने भाव विभोर होकर की, सबके दिल उससे प्रभावित थे।

उसके बाद "अद्वितीय जीवन व्रत धारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" नामक भजन का गान किया गया।

सभापति जी ने फरमाया कि किसी अस्तित्व के सद्गुणों को देखना भी स्वर्गीय लीला है, पर देवात्मा के देव रूप को किसी अंश देखना परम स्वर्गीय लीला है। नेचर में विकास का क्रम जारी है। पौधों, पेड़ों में अथाह विकास हुआ है और हो रहा है। पशु जगत में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन जारी है। भौतिक जगत में भी हैरानी जनक परिवर्तन हुआ है, और जारी है। जो सुविधाएं पहले राजाओं महाराजाओं को उपलब्ध नहीं थीं, आज विकास के युग में साधारण मनुष्य को उपलब्ध हैं। मनुष्य जगत में भी असाधारण विकास हुआ है, बलवान, विद्वान वा साईंसदान पैदा हुए हैं। सात्विक जीवन धारी जन पैदा हुए हैं। सात्विक जीवन-धारियों के विकास में फादर डैमीयन, फलोरिंस नाईटिंगेल, एब्राहिम लिंकन, मार्कस, राजा राम मोहन राय, डाक्टर विद्या सागर, भक्त पूर्ण सिंह जी, मदर टैरेसा पैदा हुए। सात्विक जीवन धारियों के भीतर आत्मिक ज्ञान का बोध नहीं है। उनके सामने आत्मिक दुनिया का रहस्य ही नहीं खुला। आत्मा की परिभाषा ही पता नहीं। आत्मा पार ब्रह्म का रूप, Flame of divinily आदि कहा गया है। सात्विक जीवन में यह ज्ञान नहीं होता कि मनुष्य को चलाने वाला कौन है? सात्विक दुनिया से ऊपर एक नये आविर्भाव का प्रकाश हुआ, जिसे हम देवात्मा कहते है। देवरूप धारी आविर्भाव प्रगट हो गए। पूर्ण सत्य अनुरागी, पूर्ण हित अनुरागी का आविर्भाव हो गया,

जिनके भीतर विज्ञान वा वैज्ञानिक विधि के लिए पूर्ण अनुराग था। जहाँ हित का अनुराग होता है, वहाँ पर पाप के प्रति पूर्ण घृणा होना अवश्यम्भावी है। सात्विक जीवन और देव जीवन में श्रेणी - गत अन्तर है। देव शक्तियों से प्रेरित हो कर देवात्मा निराला जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर हो गए। हमारा लक्ष्य सुखों की पूर्ति या तृप्ति है। देव भावों ने देवात्मा को नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया, "सत्य, शिव, सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के ही उपकार में जीवन यह जावे" यह दुनिया से बिल्कुल अलग लक्ष्य का ऐलान किया। मनुष्य का लक्ष्य आत्म ज्ञान वा आत्म कल्याण ही होना चाहिए।

देवात्मा का परम लक्ष्य समझ आना ही कठिन है। दुनियापरस्त लोगों ने लक्ष्य ग्रहण के अनुष्ठान में ही हल्ला गुल्ला मचा दिया। देवात्मा का स्वागत करने के स्थान में उनकी विरोधता की गई। मिस मेरी कारपैन्टर, महात्मा बुद्ध, मेजर टक्कर बूथ सबसे देवात्मा प्रभावित हुए, उनकी सेवा वा कुर्बानी से प्रभावित हुए और उससे जीवन व्रत ग्रहण करने की प्रेरणा हासिल की। उनके प्रति सदा कृतज्ञता का प्रकाश करते रहे। सैंकड़ों, हजारों विरोधी उठ खड़े हुए। उनको शैतान, राक्षस कहा गया, उनको मारने, तड़पाने या मरवा देने के लिए अपीलें अरदासें की जाती रहीं। पागल, खबती, मूर्ख, भिखमंगा बताया गया। झूठा, ठग, प्रवंचक, खूनी, हत्यारा प्रसिद्ध किया गया। देवात्मा अज्ञात, सन्तप्त, परित्यक्त और अनादृत थे। देवात्मा ने घोर अज़ाब बर्दाश्त किए, जिसके मुकाबले घड़ी भर की फांसी कुछ भी हकीकत नहीं रखती।

फिर मुकदमों के द्वारा तड़पाया गया। चन्दा सिंह नाबीना ने देव धर्म और देवात्मा को गारत करना अपना लक्ष्य बना लिया।

फिर धर्म पाल ने देवात्मा को तड़पाना, पीड़ित करना अपना लक्ष्य घोषित कर दिया। परन्तु देवात्मा अपना एक कदम भी पीछे नहीं हटा सकते थे। घोर निराशा में भी उन्होंने नेचर को सम्बोधन किया और कहा :-

Weeping and Wailing, I will hold on

फिर देव रत्न 24 वर्ष सेवाएं पाकर कृतघ्न बन गए। अन्त में देव रत्न जिसने देवात्मा के लिए कहा था कि मेरे हमलों से देवात्मा जांबर नहीं हो सकेंगे, स्वंय परास्त हुआ और पंजाब छोड़कर भाग गया।

देवात्मा जांकंदनी में से गुज़रकर तड़प तड़प कर भी देव धर्म का कारज करते रहे और जीवन व्रत के प्रति पूर्ण वफादार रहे, उसी का फल हमारे जीवनों में आया शुभ परिवर्तन है।

सभा बहुत प्रभावशाली थी। उपस्थित जनों के हृदय देवात्मा के दुख सुनकर पिघल रहे थे।

जन और धन की अपील

श्री नरेन्द्र दत्त जी धीमान ने अपना जीवन भेंट किया। गुरुदेव राज जी, मधू सूदन जी, जलधर जी, श्री सरुप जी वशिष्ट जी, सीता राम जी संगरूर, सत्संग के लिए समय निकालेंगे।

श्री सुरेश कुमार और श्री राजेन्द्र मल्लेका (नये जन) ने शराब, मास और अण्डे छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसके बाद दान की अपील की गई, दान भी अच्छी मात्रा में हुआ।

बच्चों की सभा दोपहर 2 बजे

यह सभा श्रीमति सुरजीत बराड़ जी ने Canduct की। छोटे - छोटे बच्चों ने बहुत ही उत्साह पूर्वक भजनों का गान वा जीवन कथाएं सुनाईं। उनको श्रीमान शादीलाल जी द्वारा स्थापित ट्रस्ट की

ओर से ईनाम वितरित किए गए, जिसमें मोनिका अरोड़ा, बेटी श्रीमान जगदीश जी ने सहायता की।

इसके बाद डा. विनोद जी खेड़ा के Coaching Centre से लड़कियों ने बहुत ही मधुर आवाज़ में भजनों का गान किया, जिसने वातावरण को बहुत प्रभावशाली बना दिया। एक लड़की ने पूजनीय भगवान की छोटी-छोटी जीवन कथाओं को इतने मधुर ढंग से पेश किया कि जो दिलों को छू गया उसका अन्दाज ही अलग था। हाजरीन ने अवश्य ही उनसे प्रेरणा हासिल की होगी। इन बच्चों को विनोद जी ने अपनी तरफ से ईनाम दिए।

पब्लिक लैक्चर – डा. विनोद जी खेड़ा

सभापति : – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय – विज्ञान के बिना धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

उपरोक्त विषय पर एक Public Lecture 5 दिसंबर 2006 को परम पूजनीय भगवान देवात्मा के 156 वाँ जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में दिया गया। पंडाल खचाखच भरा हुआ था और बहुत से व्यक्तियों को पंडाल के बाहर भी बैठाना पड़ा। इस लैक्चर के सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी थे तथा वक्ता श्रीमान डा. विनोद खेड़ा जी। मनुष्य के दैनिक जीवन के विचारों एवम् कार्यों को दिशा देने के लिए विज्ञान के सिद्धान्तों के प्रयोग के महत्त्व को समझाते हुए डा. विनोद खेड़ा ने कहा कि "सच्चे" विज्ञान और "सच्चे" धर्म के बीच कभी किसी किस्म का टकराव हो ही नहीं सकता क्योंकि यह दोनों वास्तविकता का चित्रण करते है। परमपरागत धर्मों के इतिहास के विषय में बताते हुए डा. खेड़ा ने कहा कि धार्मिक शिक्षाओं में अंध विश्वास ने मनुष्य की कल्पना शक्ति के ऊपर अपना जबरदस्त अधिकार जमा रखा है क्योंकि विश्व और उसके नियमों के विषय में हमारी वैज्ञानिक जानकारी बहुत सीमित थी, विशेषकर हमारे "स्वयं" के बारे में अधिकतर धर्म ईश्वर या उसके पुत्र या उसके द्वारा रचित किसी देवी-देवता, की पुस्तक अथवा उनकी पूजा को ही धर्म मानते रहे हैं। आज के युग के महानतम वैज्ञानिक अल्बर्ट आईस्टाईन ने बहुत साफ शब्दों में ये बात बार-बार कही है कि मनुष्य के अविकसित दिमाग ने ही अपनी कल्पना के द्वारा सर्व शक्तिमान, सर्व हितकारी, सर्व व्यापी ईश्वर की रचना की है न कि ईश्वर ने पृथ्वी या मनुष्य की। उनका कहना है कि यदि ईश्वर सब का भला चाहता हो और सर्व शक्तिमान भी हो तो वह विश्व में किसी भी बुराई को कतई होने नहीं देगा। उनका यह भी कहना है कि यदि तथाकथित ईश्वर सर्व शक्तिमान है तो मनुष्य द्वारा की गई सभी बुराईयों के लिए उसे भी जिम्मेवारी लेनी होगी और उसे भी दोषी ठहराया जाना चाहिए।

अमेरिका के सबसे पहले राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन के विषय में डा. खेड़ा ने बताया कि वे ईसाई धर्म के मिथ्या रस्मों रिवाजों में विश्वास नहीं रखते थे और चर्च में होने वाली उन रस्मों रिवाजों से पहले ही उठकर चले जाते थे।

अमेरिका के सबसे महान राष्ट्रपति एब्राहिम लिंकन ने कहा था, "ईसाई धर्म के धर्म ग्रंथों में मोक्ष के विषय में तथा मानव जगत के आरम्भ के विषय में दी जानी वाली जो भी शिक्षा है, उसे मैं समय के साथ-साथ और भी साफ तौर पर ज़ोरदार ढंग से गलत मानता हूँ और मुझे ऐसा कोई भी कारण नहीं दिखता जिससे मैं कभी भी इस विषय में अपने विचारों को बदलूंगा"। वे ईश्वर को भी नहीं मानते थे और उन्होंने 19 नवम्बर 1863 में Gettisberg का जो लैक्चर दिया था, उसमें उनकी

Speech के बहुत बाद ईश्वर का नाम जोड़ा गया जबकि उन्होंने ईश्वर के शब्द का अपने भाषण में प्रयोग ही नहीं किया था। अपनी युवा अवस्था के दिनों में एब्राहिम लिंकन ने एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया था कि ईसा मसीह का ईश्वर का पुत्र होना और ईसाई धर्म की मोक्ष विषयक शिक्षा मिथ्या है।

अमेरिका में 1860 ई० में राष्ट्रपति चुनाव निकट थे। इन चुनावों की गहमागहमी में Christian Union को एक आश्चर्यजनक सच्चाई स्वीकार करनी पड़ी कि शायद अमेरिका के पहले राष्ट्रपति को छोड़ कर पहले 19 राष्ट्रपतियों में से कोई भी ईसाई Church का सदस्य नहीं था।

धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं को विज्ञान की कसौटी पर कसने की आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ. खेड़ा ने कहा कि Oxford विश्वविद्यालय के Professor of Public Understanding of Science डा. रिचर्ड हाकिंस ने कहा है कि जहाँ तक हम अपने बच्चों को सच्चाई पर विश्वास करना सिखाते है जैसे "आग में हाथ ना डालो, जल जाएगा" वहाँ तक तो ठीक है यदि हम धर्म के माध्यम से अवैज्ञानिक या झूठी धारणाओं का प्रचार करते हैं, उन्हें मिथ्या संस्कार देते हैं तो ऐसा करना बिल्कुल वैसे ही है जैसे कोई व्यक्ति Computer में विशेष प्रोग्रामिंग भाषा का प्रयोग करके Computer को यह आज्ञा देता है कि उसकी Hard Dish में जो भी है उसे साफ कर दे। Computer तो वह ही करेगा जो उसे बताया जाएगा। Computer का Virus भी Computer में वही करेगा जो Virus की प्रोग्रामिंग कहेगी।

डा. खेड़ा ने आगे चलकर बताया कि विज्ञान द्वारा खोजी गई सच्चाई को मनुष्य या तो जबर्दस्ती अपने धर्म में घुसाने की कोशिश करता है या जबर्दस्ती यह प्रमाणित करने की कोशिश करता है कि वे सारी सच्चाईयां उनके धर्म ग्रंथों में पहले से ही बताई गई हैं। इसका एक उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक शोध ने यह प्रमाणित किया है कि मनुष्य का दिल उसके वजूद में दिमाग के विकसित होने से पहले ही धड़कने लगता है। मनुष्य के दिल की अपनी स्नायु प्रणाली (Nervous Systems) होती है। इस बात को आधार बना कर मनुष्य के दिल को उसके जीवन की शुरूआत करने वाला कहना सर्वथा गलत होगा क्योंकि अगर ऐसा होता तो Heart Transplant के बाद इन्सान का व्यक्तित्व ही बदल जाता। इसके अतिरिक्त दिल का निर्माण भी तो किसी ने किया ही है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने यह सत्य खोजा और प्रगट किया है कि मानव शरीर को बनाने वाला उसका आत्मा है और इस आत्मा का जन्म माता और पिता के डिम्बाशय (Sperm) और शुक्राणु (egg) के मेल से होता है। इसी नन्ही सी आत्मा की निर्माणकारी शक्ति माता के पेट में बच्चे के शरीर का निर्माण करती है और उसे माता के पेट में तथा बाद में इस पृथ्वी पर स्वतंत्र रूप में ज़िन्दा रखती है, जब तक उसकी शारीरिक मौत न हो जाए। इसके पश्चात् योग्यता रखने पर मनुष्य की यही आत्मा परलोक में निवास के लिए उसका एक नया सूक्ष्म शरीर निर्माण करती है। विज्ञान के आधुनिकतम अनुसंधान ने भगवान देवात्मा की इस परलोक विषयक खोज को सच्चा प्रमाणित किया है।

भगवान देवात्मा ने मनुष्य की आत्मा के विषय में सम्पूर्ण विज्ञान सम्मत ज्ञान दिया है। उन्होंने खोजा है कि मनुष्य की आत्मा उसके शरीर की न्याई गठन प्राप्त है। जिस प्रकार भौतिक शरीर

के विभिन्न अंग है यथा आँख, नाक, दिल, दिमाग, फेफड़े आदि। उसी प्रकार आत्मा एक शक्तिमय गठन प्राप्त अस्तित्व रखता है और मनुष्य के शरीर के हर अंग में वास करता है। इस शक्तिमय अस्तित्व अर्थात आत्मा के अंग हमारी नीच व उच्च भाव शक्तियाँ हैं, जिन्हें देव धर्म की परिभाषा में नीच अनुराग व नीच घृणाएं एवं उच्च अनुराग तथा उच्च घृणाएं कहा जाता है। मनुष्य आत्मा सुख चाहता है, और उसकी प्राप्ति के लिए अपनी व दूसरों की हानि करने के लिए सदैव तैयार रहता है। मनुष्य आत्मा की नीच शक्तियां यथा अहं, स्वार्थ, आलस्य, धन, सम्पति, अनुचित कामवासना इत्यादि मनुष्य को दुखों, मुसीबतों, गिरावट तथा अन्ततः विनाश की ओर ले जाते हैं। इसके विपरीत मनुष्यात्मा के उच्च भाव यथा श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी, निःस्वार्थ परसेवा इत्यादि उसका मनुष्य तथा पशु, पौधे और निर्जीव जगतों के साथ उच्च मेल लाने में सच्चा सुख व सच्ची खुशियां प्रदान करते हैं। यह उच्च खुशियां प्राप्त करने के लिए तथा नेचर में उच्च मेल व एकता लाने के लिए मनुष्य को अपनी आत्मा के विषय में गहराई से ज्ञान पाने की आवश्यकता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने जन्म काल से ही ऐसी विशेष शक्तियां पाईं, जो उनके जीवन काल में विकसित होती चली गईं। यह शक्तियाँ इससे पहले मानवता में नहीं थीं। वे कभी और किसी हालत में भी मिथ्या और बुराई का साथ नहीं दे सकते थे। सदैव हर प्रकार के सत्य और हर प्रकार के शुभ को लाने का प्रयास करने के लिए अपनी जान तक न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उनकी यह अद्वितीय देव शक्तियाँ जब हम में से अधिकारी मनुष्यों के आत्माओं में घुसती हैं तो न केवल हमें हमारी नीच शक्तियों और उनसे हमारी जो हानि होती है उसे दिखाती हैं, अपितु उनसे मोक्ष पाने की योग्यता भी प्रदान करती हैं। डा. खेड़ा ने अपने जीवन से कई उदाहरण प्रस्तुत किये कि किस प्रकार उन्हें भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति में अपनी अनेक कमियां दिखाई दीं और उनमें उनके विषय में परिशोध का भाव पैदा हुआ। उन्होंने बताया कि उनके पिता जी की मृत्यु से दो दिन पहले वह उनका अपमान कर गये थे जिसका उन्हें तभी पता भी चल गया और बहुत अफसोस भी हुआ। उसी समय उन्होंने अपने पिता जी से माफी भी मांगी और अब जब कि उनके पिता जी को परलोक गमन किये हुए लगभग 16 वर्ष होने वाले है वह आज भी उनसे समय-समय पर अपने निज के साधनों में दुखी हृदय से क्षमाप्रार्थी होते रहते हैं। अपने अत्यन्त उपकारी पिता का अपमान करने वाले एक व्यक्ति को किस ने ऐसी अवस्था में पहुँचाया? भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों ने। उन्होंने अपनी कई और घटनाओं का वर्णन किया जिनसे पता चलता था कि भगवान देवात्मा की अद्वितीय ज्योति में ही मनुष्य को अपना असल घिनौना रूप नजर आ सकता है।

Einstein के शब्दों को बताते हुए डा. खेड़ा ने कहा कि अंधविश्वास मानवता की विज्ञान मूलक सोच विचार बनाने के बारे में एक बहुत बड़ा रोड़ा बन गये हैं और सच्चा धर्म ही सच्चे विज्ञान की सहायता से मानवता को उसके अंध विश्वासों और नीचता से मुक्त करके तथा उनमें उच्च भाव पैदा करके मानवता को सच्चे सुख और सच्ची खुशियाँ प्रदान करने के रास्ते पर ले जा सकता है।

भगवान देवात्मा यही सब कुछ कर रहे हैं। उनमें मानवता को मिथ्या एवम् बुराई के अंधकार से

निकालने और सच्चाई और भलाई और उससे आने वाली सच्ची खुशियाँ और उच्च मेल प्रदान करने की पूर्ण सामर्थ्य है। उनकी शरण में आना और उनसे उपरोक्त लाभ उठाना किसी भी मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा अधिकार और सौभाग्य है।

6 - 12 - 2006

पहली सभा :- सुबह 8.00 बजे

सभापति जी :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

भजन और देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। 6 सौभाग्यवान जनों को सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो इस प्रकार है :-

1 रणदीप सिंह बराड़, बेटा श्रीमान अवतार सिंह बराड़, मोगा।
2 श्री गुरुदीप सिंह, बेटा सुखदेव सिंह, केसूपुरा
3 श्री बलदेव राज, बेटा श्री सुन्दर लाल जी मल्लेका
4 रेशमा रानी, बेटी श्री सुन्दर लाल जी मल्लेका
5 श्रीमति दविन्द्र कौर जी पत्नी श्री सरताज सिंह जी एम. ए. केसूपुरा
6 श्रीमति लखविन्द्र कौर पत्नी सुरजीत सिंह जी केसूपुरा

सबसे पहले सारे नये बनने वाले सेवकों का परिचय करवाया गया। सब ही बहुत शरीफ माता पिता की सन्तान थे और काफी सीमा तक देव धर्म को जानकर और समझकर सेवकी ग्रहण करने के लिए तैय्यार हुए थे। एक दो और जन भी चाहते थे कि उन्हें सेवक बनाया जाए, परन्तु अभी प्रबन्ध को यह लगा कि उन्हें अभी प्रतिज्ञाओं पर और पक्का होने दो और देव धर्म की शिक्षा की कुछ समझ आने दो।

उसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने प्रतिज्ञाओं के महत्त्व को बताया और एक-एक प्रतिज्ञा को बहुत विस्तारपूर्वक समझाया और फिर प्रतिज्ञाएं करवाईं। उसके बाद सबके गलों में फूलों के हार डाले गए और उनके सेवक बनने की खुशी में कुछ जनों ने दान भी दिया।

उसके बाद अगली सभा का प्रोग्राम शुरू हुआ, जिसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। उन्होंने संक्षेप में सब सभाओं का हाल बताया और हाजरीन से प्रार्थना की कि वह अपने-अपने लाभ का संक्षिप्त रूप से ब्यान करें।

भाव प्रकाश

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी,

श्रीमान गुरुदेव राज जी :- नेक बच्चे पिता की पगड़ी को दाग नहीं लगाते, अब हमारे ऊपर एक और जिम्मेदारी भी आ गई है। अब सेवक बनकर पीली पगड़ी को दाग नहीं लगाना। मैंने एक प्रतिज्ञा दिल में ही की है, मैं उस पर पक्का रहने का पूरा यत्न करूँगा, फिर अगले साल ब्यान करूँगा।

मधु सूदन जी :- भाई साहिब विनोद जी बता रहे थे कि मैं काम चोर बन गया था, मैं तो सचमुच ही का चोर हूँ। घर में ही चोरी करता था। घर में से दाने चोरी करके खा जाता था। पड़ोसियों के खेतों से गन्ने वा अन्य चीजें तोड़कर खा जाता था, कहता यही था कि पड़ोस खेत वाले भी हमारी फसल में से खा लेते हैं, जबकि मैंने उन्हें कभी देखा नहीं था, यह बात बार-बार दुखी कर रही है। कई रिश्तेदारों की जेबों से चोरी की। नेचर Cure Centre में से भी चादरें आदि चोरी कर लीं। लकड़ी चोरी करके अपने Box बना लिए। आनन्द साहिब के घर से भी अपनी ही चीज़ समझकर लेता था। मैंने बहुत सेवाएं पाई हैं, मैं उनका ऋण कैसे चुकाऊंगा।

श्रीमान सुभाष जी :- सब सभाएं मेरे पारिवारिक जनों ने सुनीं। गुरू कृपा से घर में पूरा मेल है। पिता जी की कृपा से परिवार समाज से जुड़कर लाभ उठा रहा है। पिता जी की विशेष मेहरबानी मुझे याद आ रही है। श्रीमान जी को भी धन्यवाद देता हूँ।

श्री राजेन्द्र जी खतौली :- मैं बहुत अच्छा बिजली मैकेनिक हूँ, परन्तु मुझे पता नहीं लगता था कि मैं क्या हूँ। धीमान साहिब मेरे गाँव में लगे हुए है। 3000 रू० दिए, सारे शराब में फूंक दिए। दो समय की रोटी के पैसे नहीं थे। धीमान साहिब मेरे पिता समान हैं। मैंने वायदा कर लिया है कि कभी शराब नहीं पीऊंगा। मैं बच गया हूँ। मेरी पत्नी डबल एम. ए. है, मैंने उसकी कदर नहीं की। मैं शराब पीकर घर आता तो मेरी पत्नी गोदी में लिटाकर मुझे खाना खिलाती, जिस प्रकार बच्चे को खिलाती है। अब मुझे इतना काम मिलता है कि मैं उतना कर नहीं सकता। पैसे की कोई कमी नहीं रही। देवात्मा जैसे गुरु नहीं मिल सकते हैं।

(पिछले कल्याण सत्संग पर यह नया जन बहुत बुरी हालत में आया था, वहाँ भी उसने सिगरेट पी, परन्तु 2-3 दिन के सत्संग से उसकी काया पलट गई, और जीवन की बरकतों से मालामाल हो रहा है।

श्रीमान सुन्दर लाल जी :- मुझे अपने पुत्र के सेवक बनने की खुशी है। यह सदा गुरु के साथ जुड़ा रहे। गुरु की कृपा इन पर बनी रहे। जब पिता जी का देहान्त हो गया, हमारे पास रहने के लिए कमरा भी नहीं था, किसी और के घर बैठे थे। जिस प्रकार माता ने हमें पाला है, वह ब्यान नहीं कर सकता। मैंने जिस प्रकार माँ का अपमान किया है, उसका हमेशा दुख बना रहता है। मैं सदमे दे देकर माता को परलोक भेजने का गुनाहगार हूँ। मैं ने अपनी धर्म पत्नी का भी बहुत अपमान किया। यहाँ आकर ही यह पता लगा है। मैं हाथ जोड़कर इनसे क्षमा माँगता हूँ। (उनकी पत्नी वहाँ बैठी हुई थीं) मेरा किसी बात से श्री जीत सिंह जी से तकरार हो गया, मैं उनसे भी दिल से क्षमा याचना करता हूँ।

श्रीमान जलधर जी :- 5 वर्ष से सेवक हूँ। बहुत परिवर्तन आया है। पिता जी के उपकारों की ओर ध्यान गया है। पिता जी परोपकार के काम बहुत करते हैं। अब मैं 5000 रू० उनके परोपकार के कामों में दान दूँगा। वह मुफ्त सेवा करते हैं। मरीजों को हस्पताल पहुँचाना, किसी गरीब की मृत्यु पर कफन खरीदने जैसी सेवा करते हैं।

श्री मान जगजीत सिंह जी :- महोत्सव पर एक बार नहीं आया, उसका दुख है। अपनी Ego पर नज़र गई है। घर में किसी की नहीं सुनता था। मेरी धर्म पत्नी साथ हैं। इनको शारीरिक तकलीफ है। मैं मासाहार से बचा हूँ, शराब से बचा हूँ। मेरे पार्टनर ने हेरा फेरी की। रात को मिलावट कर दी। जो नुकसान हुआ, उस नुकसान को अपने नाम डलवाकर मैंने धीरे-धीरे पूरा किया। और उसकी गलती का कफारा मैंने स्वयं किया। भल्ला साहिब के घर पहले सभाएं Attend की, बहुत लाभ होता था। उपकारियों के उपकार नज़र आने लगे, जो पहले नज़र नहीं आते थे। मैं प्रतिदिन गुरु महाराज को प्रणाम करके, फिर सब बड़ों को प्रणाम करता हूँ। अपने गाँव में जाकर अपने खेतों में पैदल घूम-घूमकर उनको देखा, उन खेतों के उपकार याद करता रहा। माता जी अभी भी मेरे साथ उसी प्रकार प्यार करते हैं, जैसे एक मासूम बच्चे को किया जाता है। बच्चे बहुत अच्छे है। मेरे परिवार का बहुत भला हुआ है।

श्रीमान सुरजीत सिंह जी :- सबका धन्यवाद करता हूँ। मेरी धर्म पत्नी सेवका बनी हैं। एक दो प्रतिज्ञा भंग हो गई, किसी के प्रति गल्त भावना का हो जाना और सरपंची के चुनाव के दौरान शराब की प्रतिज्ञा टूट गई। मैं अगले महोत्सव पर बहाल हो सकूं। हम दोनों मिलकर अपना भला कर सकें।

श्रीमान अवतार सिंह जी :- हमारे लिए आज का दिन विशेष है। हमारा लड़का सेवक बना है। यह लड़का इतना पवित्र और ईमानदार कि मुझे इस पर गर्व है। खेलों में भी बहुत अच्छा है। आशा है पढ़ाई में भी और अच्छा हो जावेगा। मैं बड़ा लापरवाह आदमी हूँ। मैं श्रीमान जी का बहुत आदर करता हूँ। इनके साथ सत्संग का वायदा करके भूल गया और डलहौज़ी पहुँच गया। कहाँ डलहौज़ी और कहां सत्संग। फिर आकर पत्र भी नहीं लिखा। हमारे बहुत बड़े उपकारी हैं श्रीमान बलदेव सिंह जी, इन्होंने हमें मरने से बचाया है। श्रीमान डाक्टर इकबाल सिंह भी बहुत बड़े उपकारी हैं। उन्होंने हमें श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ जोड़ दिया और बहुत बड़ा उपकार कर दिया। बच्चों का बहुत भला हुआ है। कल्याण सत्संग पर ज़रूर पहुँचेंगे। मेरी धर्म पत्नी के अन्दर बहुत गुण हैं। लोग उन पर बहुत विश्वास करते हैं। मैं आगे से अपनी प्रतिज्ञा पर पक्का रहूँगा।

श्रीमति भरपूर कौर :- जब हम मैंबर बने, मेरा बेटा साढ़े तीन वर्ष का था, मेरा बच्चा कभी ज़िद नहीं करता था। मुझे सदा इसकी तरफ से बेफिकरी रही, यह सदा सुरक्षित रहे। हमारे भीतर कोई योग्यता नहीं। करैक्टर और नशों की तरफ से हम अपने बच्चे की तरफ से बेफिकर हैं। मेरा बच्चा सेवक बन गया, इसका लोक परलोक सुधर गया है।

श्रीमान तेज राम जी गुजरात :- मोगा क्षेत्र बड़ा आबाद था। आज की हालत बहुत दुखदाई है। एक तर्क शील के साथ रहने का मौका मिला, वह मेरे व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ कि मैंने उसे कोई अपशब्द नहीं बोला, यह गुरु की कृपा है। फिर उसने मुझे एक किताब भेंट की। गुरु की कृपा से परे होकर मैं भी इस हालत में पहुँच गया कि एक आदमी से इतनी दूरी हो गई कि या मरना है या मार देना है। सेहत भी खराब कर ली। पिछले साल खेड़ा साहिब के लैक्चर से लाभ हुआ। पाँच आदमियों से नशे छुड़ाऊंगा। यदि यह वायदा पूरा न करूं तो 100 रू० प्रति आदमी जुर्माना दूँगा। अवतार सिंह जी वा भरपूर कौर जी के सुपुत्र के सेवक बनने की बहुत खुशी है। मोगा क्षेत्र उजड़ गया है, मेरी बेनती है कि इसको कोई आबाद करो।

श्रीमान सुखदेव कुमार जी :- कल के लैक्चर से बड़ा लाभ हुआ। मेरे माता जी के उपकार नज़र आए हैं। मैं कृतघ्न नहीं रहना चाहता। मैं प्रतिदिन माता जी को प्रणाम किया करूँगा। मैं अच्छा अध्यापक बनने की कोशिश करूँगा।

श्रीमान बूटा सिंह जी :- पण्डाल की रौनक को देखकर बेहद खुशी हुई। मुझे कुछ सेवा का मौका मिला जिसे करके मैं धन्य-2 हो गया। एक बार कुछ श्रीमान जी का अपमान हो गया, जिसकी क्षमा मांगता हूँ। माता जी याद आती रहीं। मां किस प्रकार सेवा फिकर करती थी। मैंने महोत्सव पर आना होता तो हमेशा पूछती कि तेरे पास पैसे हैं, अपने रूमाल से निकाल कर दे देतीं, अब मेरे बच्चों ने नहीं पूछा। माँ परलोक चली गई, मैं अपनी गल्तियों की उनसे क्षमा मांगता हूँ, जो मैं माँ को दुखी करता था, अब बहुत दुखी करता है। एक बार मेरा बच्चा घर नहीं आया तो मेरी पत्नी बहुत

दुखी थी। मेरे से भी माता जी इसी प्रकार दुखी होती थीं। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का भी अपमान कर देता था। उनसे भी क्षमा माँगता हूँ।

श्रीमान जीत सिंह जी :- कुछ दिन पहले मेरे मिस्त्री दोस्त कहने लगे कि पहले तेरा घर बनाना है। कल खेड़ा साहिब के लैक्चर में Paid in full with a glass of milk ने मुझे हिला दिया। माता के उपकारों को सामने ला दिया। माता के दूध और खून का उपकार दिल पर अंकित हो गया है। अब माता जी की सेवा करता हूँ। (भरे दिल से माँ की बिमारी और सेवा का ब्यान किया) सब कुछ माता जी का ही दिया हुआ है। एक जन हररोज़ किसी के घर खाना आदि खाता, परन्तु एक दिन उसने घर के मालिक को कहा कि मेरे पास खाना खाओ। उस खिलाने वाले ने एक एक करके सब चीज़ें उनके ही घर से लाकर इकट्ठी कर ली, और जब उपकारी को खाना खिलाने लगा तो उसने खाने की बहुत तारीफ की। वह अपने हाथ से अपने उपकारी को पंखा भी कर रहा था। अपनी प्रंशसा सुनकर उसने कहा, कि "मेहरबानो सब कुछ आपका है, मेरी तो सिर्फ पंखे की हवा ही है" सब कुछ माता पिता का है, उनके बिना हमारी कोई हस्ती ही नहीं। माता जी अपने भतीजे को कहने लगी, "लाख हो चाँद चाँदनी पर, दिल जैसी रीस नहीं" मतलब के बेटों जैसा कुछ नहीं। मुझे पता लगा कि माता जी मुझे कितना प्यार करती हैं। माता जी का जिस डाक्टर से ईलाज करवाया, उन्होंने धन्यवाद के सिवा कुछ नहीं लिया। मैं उनका शुक्रगुजार हूँ।

श्रीमान हरदेव सिंह जी :- मैं कहता था कि हमारे बूढ़े के लिए सभा सुनने वाली है, पर सारी मुसीबत की जड़ मैं ही हूँ, पिता जी सभा में आने लग गए थे, पर मैं दोषी हूँ, मेरी कमियों के कारण ही वह सभा में नहीं आते। गुरुदेव राज जी से सहायता माँगता हूँ। छोटे भाई से ट्रेकटर खराब हो गया, मैंने उसे खूब डांटा, अब जाकर क्षमा माँगूगा।

राज कुमार जी ने जरदा छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

रणजीत सिंह जी ने कल्याण सत्संग पर आने का वायदा किया और भी कईयों ने सत्संग पर आने के वायदे किए।

यह सभा 1.30 बजे तक चली। वक्त की तंगी के कारण भाव प्रकाश बन्द करने पड़े।

उसके बाद सभापति जी ने जहाँ पूजनीय भगवान देवात्मा का धन्यवाद किया, वहाँ धर्मशाला के प्रबन्ध का दिल से धन्यवाद किया, जिनकी कृपा से ऐसा सुन्दर और खुला स्थान हमें मिल जाता है। और सब प्रबन्ध करने वालों, पण्डाल सजाने, खाना बनाने और सब सेवा करने वालों का धन्यवाद किया। सहायकारी शक्तियों को भी धन्यवाद किया और फिर जोश से भरकर सबने देव आरती का गान किया और चार बार जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

कल्याण सत्संग

हर साल की तरह इस साल भी कल्याण (भटिण्डा) में विशेष सत्संग और माता-पिता दिवस 8 फरवरी रात्रि से 11 फरवरी दोपहर तक रखा जायेगा। पाठक नोट फरमावें।

-मन्त्री

शुभ संग्राम

संगरूर :– 11 अक्टूबर को श्रीमान बलदेव सिंह जी एक साथी के साथ पहले संगरूर पहुँचे। वहां कुछ देर सीता राम जी के पास रुके। वहां से शाम तक बठिण्डे पहुँचे। यहां पर श्रीमान तारा सिंह जी संधू पुत्र स. आत्मा सिंह संधू खेमोआणा, जो समाज के पुराने श्रद्धालु हैं, की 6 अक्टूबर को मृत्यु हो गई थी। उनके घर जा के उनके परिवार से मिल के शोक और हमदर्दी का प्रकाश किया गया। उन्होंने हित स्रोत पत्रिका जारी रखने के लिए कहा।

डबवाली :– यहां श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने एक साथी सेवक के साथ 11 अक्टूबर को देर शाम को पहुँचे। यहां कुछ धर्म सम्बन्धी साथी सेवकों ने मिल के भजन कीर्तन किया। बाद में देव आरती का गान किया गया। 12 तारीख को यहां रुके। कई जनों को मिले। मन्दिर के गेट के सामने के स्थान को ठीक करने का प्रबन्ध किया।

थराजवाला :– 12 तारीख को यहां आ के श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार को लेकर एक सभा की गई। इस सभा में बताया गया कि सत्संग में बरकतें बटती हैं। मनुष्य को उसकी कदर न होने के कारण बहुत कम लोग उन्हें प्राप्त कर रहे हैं। गाँव में स्कूल चला रहे हैं। सरकार बहुत खर्चा कर रही है। पर बहुत थोड़े हैं जो इनसे लाभ उठा रहे हैं। इसी तरह हस्पताल हैं बहुत ही कम लोग ठीक इलाज का लाभ उठा रहे हैं। सदियों से देव समाज बहुत बरकतें बाँट रही है। पर बहुत कम लोग इसको देखते हैं और लाभ उठाते हैं। अगले दिन श्रीमान बलदेव सिंह जी के घर सभा रखी गई। सभी श्रद्धालुओं और सेवकों को पता दिया गया। इस सभा में बताया गया कि घर घर में पाप की आग लगी हुई है। इन्सान जल रहा है। पूजा-पाठ इस आग को बुझा नहीं सकते। देव आत्मा की शक्ति इस आग को बुझाती है। कुछ सच्चे उदाहरण पेश किये गये। कुछ धर्म सम्बन्धी आ कर मिले। श्रीमान काकु सिंह जी ने अपने बेटे की शादी की खुशी में 1100 (ग्यारह सौ) रूपये दान में दिये।

कल्याण :– श्रीमान जी 12 अक्टूबर की शाम को थराजवाला से यहां पहुँचे। रात को एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि मनुष्य के अन्दर इच्छाएं, नीच सुख हैं। धर्म प्राप्त करने की कामना दुर्लभ कामना है। विरले मनुष्य के अन्दर ये हितकारी जीवनदायक कामना पैदा होती है। श्रद्धेय श्रीमान देवत सिंह जी के दृष्टांत द्वारा सभा के विषय को प्रभावशाली बनाया गया।

14 अक्टूबर सुबह 8.30 बजे :– श्रीमान जी ने बताया कि छोटे-छोटे हितकर साधन के साथ भले का रास्ता शुरू हो जाता है। पक्षियों के लिए हर रोज़ दाना पानी रखना हितकर साधन है। असली साधन से ही भला होता है। सुबह उठ के गुरु महाराज के आगे सच्चे भावों के साथ, उन के उपकारों को याद करके धन्यवाद करते हुए प्रणाम करने का बड़ा हितकर साधन है। श्रद्धेय श्रीमान निर्मल सिंह जी की माता को गुरु महाराज को प्रणाम करने का साधन दिया गया। जो इसे निष्ठा के साथ निभाता है, लाभ उठाता है छोटे अमली साधन की अहमियत दर्शाई गई।

बाकी पेज 2 पर

Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका
(2007)

1.	माता पिता और संतान के सम्बंध में	7 जनवरी रविवार
2.	भाई बहनों के सम्बंध में	23 जनवरी मंगलवार
3.	देव समाज के सम्बंध में	11, 12 फरवरी रविवार, सोमवार
4.	पति पत्नि के सम्बंध में	3 मार्च शनिवार
5.	उद्‌भिद् जगत् के सम्बंध में	19 मार्च सोमवार
6.	भृत्य स्वामी के सम्बंध में	3 अप्रैल मंगलवार
7.	वंशीय जनों के सम्बंध में	1 मई मंगलवार
8.	स्वदेश के सम्बंध में	26 जून मंगलवार
9.	साथी सेवकों के सम्बंध में	28, 29 जुलाई शनिवार, इतवार
10.	स्वास्तित्व के सम्बंध में	27, 28 अगस्त सोमवार, मंगलवार
11.	पशु जगत के सम्बंध में	20 सितम्बर वीरवार
12.	परलोक के सम्बंध में	11 अक्तूबर वीरवार
13.	स्वजाति के सम्बंध में	21 अक्तूबर रविवार
14.	भौतिक जगत के सम्बंध में	9 नवम्बर शुक्रवार
15.	मनुष्य मात्र के सम्बंध में	24 नवम्बर शनिवार
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सबंध में	22, 23, 24, 25 दिसम्बर शनिवार, इतवार, सोमवार, मंगलवार सोमवार 24 दिसम्बर विशेष दिन

नोट : 1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्मदिन 24 दिसम्बर 2007 ई. सोमवार।

2. साधनों के जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए हैं, वह साधन विविध स्थानों में उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्योहार मनाया जाये।

पाठकों को नया साल बहुत बहुत मुबारक हो ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts